गंगा दशहरा व्रत कथा (Ganga Dussehra Vrat Katha)

गंगा दशहरा (Ganga Dussehra) या गंगा दशमी हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण त्योहार है जो प्रति वर्ष ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को मनाया जाता है। इस दिन गंगा नदी के अवतरण की कथा से जुड़ा एक रोचक पौराणिक प्रसंग है।

पुराणों के अनुसार, एक समय महाराज सगर ने एक विशाल अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया था। उस यज्ञ के घोड़े की रक्षा का दायित्व उनके पौत्र अंशुमान को सौंपा गया। लेकिन देवराज इंद्र ने सगर के यज्ञीय अश्व का अपहरण कर लिया। यह यज्ञ के लिए एक विघ्न था। अंशुमान ने राजा सगर के 60,000 पुत्रों के साथ अश्व की खोज शुरू की। उन्होंने पूरी पृथ्वी खोज ली पर अश्व का पता नहीं चला। अंततः उन्होंने पाताल लोक में अश्व की खोज के लिए पृथ्वी को खोदना शुरू किया। पाताल में उन्हें महर्षि कपिल के आश्रम के पास वह अश्व मिला। लेकिन महर्षि कपिल उस समय ध्यान में लीन थे। सगर के पुत्रों ने कपिल मुनि को चोर समझ लिया और उन्हें परेशान किया। इससे क्रोधित होकर महर्षि ने अपने तेजस्वी नेत्रों से सभी 60,000 पुत्रों को भस्म कर दिया। इन मृत पुत्रों के उद्धार के लिए महाराज सगर के वंशज भगीरथ ने कठोर तपस्या की। भगीरथ की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान ब्रह्मा ने उन्हें गंगा को पृथ्वी पर लाने का वरदान दिया। लेकिन गंगा के प्रचंड वेग को धारण करने में पृथ्वी असमर्थ थी। तब भगवान शिव (Lord Shiva) ने अपनी जटाओं में गंगा को धारण करके उनके वेग को कम किया।

इस प्रकार भगीरथ के प्रयास से गंगा पृथ्वी पर अवतरित हुईं। गंगा के जल से भगीरथ ने अपने पूर्वजों की अस्थियों का तर्पण किया और उन्हें मुक्ति दिलाई। गंगा के अवतरण के इस पावन दिन को गंगा दशहरा के रूप में मनाया जाता है।

www.janbhakti.in